ISSN : 2229-7227
Price : ₹ 500
$ 70

Year : 7
Issue : 27
July-Sept 2017
www.chintanresearchjournal.com
Impact factor : 2.725

International Refereed

चिन्तन Chintan

Research Journal

रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज–विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest . U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJINDEX))
(UGC Approved Sl. No. 41241)

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

आचार्य अकादमी
भारत
ISO 9001 : 2008

website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 2.725

ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

वर्ष : 7 अंक : 27
विक्रमी सम्वत् : 2074
जुलाई-सितम्बर 2017

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

आचार्य अकादमी

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

शोध–आलेखानुक्रम

सम्पादकीय

* Gandhi's Concept of Religion : A Philosophical Reflection
  - Anu Kandhari 12–16
* MSMEs And the Indian Economy
  - Vinati 17–22
* लखमीचंद और दयाचंद मायना : दृष्टि का फर्क
  - डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर 23–27
* A Comparative Study of Financial Strength of J.K Tyres and Ceat Tyres Company Ltd
  - Naveen Kumar, Vikas Kumar 28–35
* Precipitation
  - Neelam, Reetu 36–41
* Causes of Juvenile Delinquency in Society
  - Pankaj Kumar 42–45
* Parallel Economy : Impact, Causes and Government Schemes
  - Ajay Singh 46–49
* Theory of Ultimate Reality in Nondualism
  - Dr. Saroj Kumar padhi 50–55
* A Study on Self-Esteem of Students With Visual Impairment In General and Special School Settings of Ambala and Panipat District
  - Dr. Vibha Kaushik 56–61
* Studying the Values included in Textbooks of Primary classes
  - Dr. Taruna Narula 62–69
* Lok Adalat in India
  - Dr. Joginder Singh 70–73
* Proposed Merger of Nationalized Banks : A Critical Analysis
  - Dr. Adarshpreet Mehta, Azadwiunder Singh 74–77
* Crime Against Women in India and The Law for Protection of Women
  - Arvind Kumar, Megha Rao 78–82
* चीन की विस्तारवादी नीति एवं वर्तमान परिदृश्य में भारत की सुरक्षा चुनौतियाँ
  - सुनील कुमार 83–86
* Reasons to Abolish 'Caste', 'Untouchability System' by the Indian Constitution
  - Abhishek 87–90
* Floods in Northern India: Causes and Effects
  - Akshay B Ahlawat 91–94

International Refereed
Impact Factor : 2.725

'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)
वर्ष 7, अंक 27 (पृ.सं. 23-27)
विक्रमी सम्वत्: 2074 (जुलाई-सितम्बर 2017)

लखमीचंद और दयाचंद मायना : दृष्टि का फर्क

डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर
एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
आर.के.एस.डी. (पी.जी.) कॉलेज
कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

जो अन्तर पूर्व मध्यकाल में कबीर और तुलसी में मिलता है, वही अन्तर हमें दयाचंद मायना और लखमीचंद में मिलता है। लखमीचंद पूर्ण रूप से द्विज संस्कृति का हरियाणवीकरण तथा दयाचंद मायना समाज सुधार एवं मानव-मानव एक समान की शिद्धत संस्कृति के ध्वज-वाहक हैं। साहित्य को समाज की दृष्टि से देखें तो दयाचंद मायना लखमीचंद से कहीं बड़े लोक कलाकार के रूप में उभर कर सामने आते हैं। लखमीचंद पूर्णतः ब्राह्मणवादी (मनुवादी) व्यवस्था के हरियाणवी लोक कलाकार प्रवर्तक के रूप में प्रकट होते हैं।

मुख्य-शब्द : जाति-व्यवस्था, लोकतांत्रिक संस्कार ।

लोक साहित्य समाज में सबसे प्रभावी भूमिका अदा करता है। लोक की जीवन शैली पर इसका स्पष्ट प्रभाव महसूस किया जा सकता है। लोक अपने सुख-दुख, आशा-निराशा, वेदना, संवेदना को लोक साहित्य के ही माध्यम से सार्वजनिक स्वरूप या प्रसार देता है। हरियाणा की जीवन शैली पर भी हरियाणा के लोक-साहित्य का पर्याप्त प्रभाव है। धनपत निंदाणा, बाजे भगत, मांगेराम, लखमीचंद और दयाचंद मायना, गुणपाल कांसंडा हरियाणा के बेहतरीन लोक कवि हैं। इन्होंने लोक छन्द रागणी और लोकविधा सांग, किस्सों के माध्यम से मनोरंजन कर हरियाणा के लोक में अपना महत्ती प्रभाव छोड़ा है। विशेष रूप से लखमीचंद और दयाचंद मायना, जिनका हम इस आलेख में विस्तार से अध्ययन करेंगे, का लोक साहित्य के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान है। जहाँ लखमीचंद ने रागणी विधा को लोकप्रिय बनाया, वहीं दयाचंद ने उस रागणी को सामाजिक सरोकारों से जोड़कर समाज सुधार का एक हथियार बनाया। दोनों कवि अपने-अपने समय के माहिर लोकप्रिय विद्वान हुए। जहां लखमीचंद ने 19 सांगों की रचना की, वहीं दयाचंद मायना ने 21 किस्सों का सृजन किया। दोनों कवियों ने फुटकल रागणियों की भी रचना की। लखमीचंद सांगी के रूप में जाने जाते हैं तो दयाचंद मायना भजनी या प्रचारी के रूप में। लखमीचंद की कथाएँ सांग कही जाती हैं तथा दयाचंद मायना की कथाएं किस्से या कथाएं। सांग और किस्सों में सैद्धांतिक कुछ भी अन्तर नहीं होता परन्तु उनके प्रस्तुतीकरण में थोड़ा अन्तर है। जहां सांग दर्शकों के बीच में स्टेज लगाकर, स्टेज के चारों ओर दर्शकों से मुखातिब होकर किया जाता है, वहीं किस्सों के प्रचार में स्टेज एक ओर होती है तथा दर्शक सामने होते हैं। सांग में कोई पुरुष स्त्री के वस्त्र पहनकर जनाने की भूमिका भी अदा करता है। प्रचार में ऐसा कुछ नहीं होता। खैर हम भजनी दयाचंद और सांगी लखमीचंद की विषयगत विशेषताओं पर अधिक समग्रता से विचार करें तो पाते हैं कि उनके कृतित्व की सामाजिक देन के मामले में पर्याप्त अन्तर मिलता है। जो अन्तर पूर्व मध्यकाल में कबीर और तुलसी में मिलता है, वही अन्तर हमें दयाचंद मायना और लखमीचंद में मिलता है। लखमीचंद पूर्ण रूप से द्विज संस्कृति का हरियाणवीकरण तथा दयाचंद मायना समाज सुधार एवं मानव-मानव एक समान की शिद्धत संस्कृति के ध्वज-वाहक हैं। साहित्य को समाज की दृष्टि से देखें तो दयाचंद मायना लखमीचंद से कहीं बड़े लोक कलाकार के रूप में उभर कर सामने आते हैं। लखमीचंद पूर्णतः ब्राह्मणवादी (मनुवादी) व्यवस्था के हरियाणवी लोक कलाकार प्रवर्तक के रूप में प्रकट होते हैं। वे